इस मास में विशेष: साधना दीक्षा

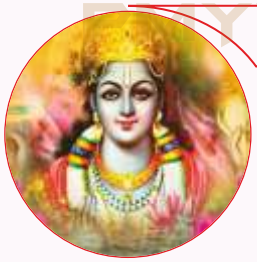

भाग्यबाधा निवारण वामन प्रयोग

19 अप्रैल, कामदा एकादशी

पूर्णता प्राप्त करना ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। चाहे वह भौतिक पक्ष हो या आध्यात्मिक पक्ष हो, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो या साधना सम्बन्धित, चाहे वह गृहस्थ जीवन का सुख हो या संन्यास जीवन का आनन्द हो। श्रेष्ठता, अद्वितीयता और सर्वोच्चता प्राप्त होनी ही चाहिये। जब तक भाग्योदय जाग्रत नहीं होता तब तक हम जितने भी प्रयत्न करे, उसका एक अंश भी लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है और थोड़ी सी सफलता बार बार प्रयत्न करने पर ही प्राप्त होती है। परन्तु इस साधना के माध्यम से हमारे जीवन के दुर्भाग्य रूपी पहाड़ में भाग्य का सूर्योदय होता है और रूके हुये भी कार्य पूरे होते हैं। एक सफलता के बाद दूसरी सफलता प्राप्त होने लगती है।

आकस्मिक धन प्राप्ति ऋण मुक्ति प्रयोग

27 अप्रैल, संकष्टी चतुर्थी

भौतिक जीवन जीने वाला हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग, आयु, जाति का हो, ऐश्वर्यवान होना चाहता है, धनवान होना चाहता है, सम्पन्न होना चाहता है, आप भी ऐसा ही चाहते होंगे, तो फिर देर किस बात की, कीजिए यह प्रयोग और प्राप्त कीजिए मनोवांछित ऐश्वर्य, धन, सम्पति एक दुर्लभ, अद्वितीय, जीवन का अत्यन्त आवश्यक प्रयोग प्रत्येक गृहस्थ के लिये।

सम्पूर्ण रोगमुक्ति धन्वन्तरी प्रयोग

05 मई, प्रदोष व्रत

धन, ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा, मान, यौवन, सब कुछ व्यर्थ है अगर आप स्वस्थ नहीं हैं.. रोगी व्यक्ति जीवन के आनन्द को नहीं प्राप्त कर सकता, समाज में नव निर्माण की प्रक्रिया नही कर सकता, सृजन नही कर सकता, समाज को, विश्व को कुछ दे नहीं सकता.. उन श्रेष्ठ ऋषियों की संतान होकर भी हम रोगयुक्त क्यों बने रहें.. उन ऋषियों की श्रेष्ठ देन 'मंत्र शक्ति' के होते हुये भी हम रोगी क्यों बने रहें, तो भाग लीजिये इस साधना में और जड़ से खत्म कर दीजिए अपने समस्त रोगों को देवताओं के वैद्य धन्वन्तरी की इस अद्वितीय साधना द्वारा।

ग्रह बाधा निवारण गंगोत्री प्रयोग

14 मई, गंगा सप्तमी

यह ईश्वर का विधान है कि समस्त लाभ और हानि ग्रहों की प्रतिकूलता एवं अनुकूलता पर निर्भर है। कुछ भी हो परंतु दुष्प्रभावी ग्रहों के दुष्परिणाम भोगने ही पड़ते हैं। नक्षत्र पथ पर ग्रहों की वर्तमान गति भीषण विपत्तियों का संकेत देती है। इस अवसर का लाभ उठाना निश्चय ही भाग्योदय कारक है। प्रत्येक साधक साधिका को यह गंगोत्री प्रयोग अवश्य करना चाहिये, जिससे व्यक्ति जो भी कार्य को करने की सोच लेता है, उसका वह कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होता रहता है। ग्रन्थों में यह विवेचन है कि इस साधना को पूर्ण एकाग्रता से निष्ठापूर्वक सम्पन्न करना चाहिये और साधना प्रारम्भ करने के पश्चात उसे नियमित रूप से मंत्र जप अवश्य करना चाहिये।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।